

ब्लूज टुडे

जॉर्ज VI आइस शेल्फ से हिमखंड के अलग होने के बाद अंटार्कटिका में समुद्र गहरे समुद्री पारिस्थितिकी-तंत्र की खोज हुई

यह खोज चैलेंजर 150 पहल के तहत की गई है। इस पहल को महासागर दशक कार्रवाई (2021-2030) के हिस्से के रूप में यूनेस्को/ अंतर-सरकारी महासागरीय विज्ञान आयोग (IOC) से समर्थन प्राप्त है। इस खोज के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

➤ समुद्र पारिस्थितिकी-तंत्र: 1,300 मीटर (मेसोपेलैजिक जोन या मध्य-वेलापवर्ती मंडल) की गहराई पर बड़े कोरल और स्पंज (Sponge) के साथ-साथ विविध जीवों से समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र मौजूद है। उदाहरण के लिए- आइसफिश और जायंट सी स्पाइडर्स।

⊕ ये पारिस्थितिकी-तंत्र सदियों से 150 मीटर मोटी बर्फ के नीचे अलग-थलग अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। साथ ही, ये समुद्री सतह से नितल की ओर जाने वाले सतही पोषक तत्वों से पूरी तरह कटे हुए थे, जो गहरे समुद्र में जीवन के लिए आवश्यक होते हैं।

➤ खोजी गई नई प्रजातियां: जायंट सी स्पाइडर्स, ऑक्टोपस, जायंट फैंटम जेलीफिश (1 मीटर तक के आकार वाली), फूलदान के आकार का स्पंज (संभवतः सैकड़ों वर्ष पुराना) आदि।

गहरे समुद्र के पारिस्थितिकी-तंत्र के बारे में

➤ परिभाषा: ये समुद्र में 200 मीटर से अधिक गहरे क्षेत्र या समुद्र नितल होते हैं। यहां तक प्रकाश नहीं पहुंच पाता है। इसलिए, इसे अप्रकाशी/ एफोटिक ज़ोन कहा जाता है। ये कुल समुद्री क्षेत्र का लगभग 90% हिस्सा हैं और इस प्रकार ये पृथ्वी के सबसे बड़े बायोम भी हैं।

➤ गहरे समुद्री पर्यावास और जैव विविधता संबंधी अनूठी विशेषताएं:

⊕ अत्यधिक विशाल सागर नितल मैदान: ये प्रकाश रहित और पंक युक्त समुद्र नितल होते हैं। यहां मौजूद प्रजातियां जीवित रहने के लिए समुद्री बर्फ पर निर्भर रहती हैं। उदाहरण के लिए- समुद्री खीरा।

◆ समुद्री बर्फ (Marine Snow): ये कार्बनिक पदार्थ होते हैं, जो समुद्री सतह से नितल की ओर गति करते हैं। ये गहरे समुद्र में रहने वाले जीवों के लिए आहार के रूप में काम करते हैं तथा कार्बन सीक्वेंस्ट्रेशन में सहायता करते हैं।

⊕ हाइड्रोथर्मल वेंट: ये समुद्र नितल पर मौजूद छिद्र या दरार होते हैं, जिनसे गर्म व खनिज से समृद्ध पदार्थ निकलते रहते हैं। यहां पाई जाने वाली प्रजातियां जीवित रहने के लिए रसायन-संश्लेषक बैक्टीरिया पर निर्भर रहती हैं। उदाहरण के लिए- ट्यूबवर्म और येति क्रैब्स।

⊕ व्हेल फॉल्स: जब व्हेल का मृत शरीर समुद्र की गहराई में डूबता है, तो यह अस्थायी पारिस्थितिकी-तंत्र का निर्माण करता है। व्हेल का मृत शरीर अपमार्जकों के लिए आहार बन जाता है। उदाहरण के लिए: हैगफिश।

गहरे समुद्री पारिस्थितिकी-तंत्र का अवलोकन

जैव विविधता की अनुकूलन क्षमता

महत्व



जैव संदीप्ति

कुछ प्रजातियां शिकार को आकर्षित करने, प्रजनन करने या शिकारी को भ्रमित करने के लिए प्रकाश उत्पन्न करती हैं। उदाहरण के लिए: एंग्लरफिश और टेनोफोरा।



ऊर्ध्वधर प्रवास

प्राणिप्लवक और मछलियां रोजाना सतह की ओर भोजन की तलाश में जाती हैं और फिर गहराई में लौट आती हैं।



धीमा मेटाबोलिज़्म

आहार की कमी वाले क्षेत्रों में, जीव न्यूनतम ऊर्जा का उपयोग करके जीवित रहते हैं। उदाहरण के लिए: स्लीपर शाक।

गहरे समुद्री पारिस्थितिकी-तंत्र पृथ्वी के पर्यावरणीय संतुलन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।



जलवायु में संतुलन बनाए रखना

गहरे समुद्र का थर्मोहैलाइन परिमंजरण (गर्म और ठंडे जल का मिश्रण) पृथ्वी के तापमान को संतुलित करता है, जो जलवायु पैटर्न को प्रभावित करता है।



कार्बन भंडारण

कार्बन-समृद्ध तलछट की 5 किलोमीटर तक की मोटाई के साथ अत्यधिक विशाल सागर नितल मैदान कार्बन के अवशोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सोशल मीडिया कंपनी एक्स (X) ने आई.टी. अधिनियम के उल्लंघन को लेकर केंद्र सरकार पर मुकदमा दायर किया

एक्स ने सोशल मीडिया पर कंटेंट को विनियमित करने और हटाने का आदेश देने के लिए केंद्र सरकार द्वारा आई.टी. अधिनियम की धारा 79(3)(b) के उपयोग को चुनौती दी है। कंपनी ने तर्क दिया है कि सरकार द्वारा इस प्रावधान का "दुरुपयोग" आई.टी. अधिनियम के अन्य प्रावधानों जैसे धारा 69A के तहत उपलब्ध सुरक्षा उपायों को दरकिनार कर देता है।

सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 (आई.टी. अधिनियम) की धाराओं 79, 79(3)(b) व 69A के बारे में

➤ धारा 79: यह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एवं ऑनलाइन सेवा प्रदाताओं जैसे मध्यवर्तियों को "सेफ हार्बर (safe harbour)" संरक्षण प्रदान करती है। यह धारा उन्हें उनके प्लेटफॉर्म पर होस्ट की गई उपयोगकर्ता-जनित कंटेंट के लिए उत्तरदायित्व से बचाती है।

➤ धारा 79(3)(b): यदि कोई मध्यवर्ती सरकारी अधिसूचना पर गैर-कानूनी कंटेंट को ब्लॉक करने/ हटाने में विफल रहता है तो "सेफ हार्बर" संरक्षण को हटा दिया जाता है।

➤ धारा 69A: यह सरकार को केवल संविधान के अनुच्छेद 19(2) में दिए गए आधार पर ही कंटेंट को ब्लॉक करने के आदेश जारी करने की अनुमति देती है। यह अनुच्छेद अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर 'उचित प्रतिबंध' लगाता है।

⊕ श्रेया सिंघल मामले में दिया गया निर्णय: कंटेंट को केवल धारा 69A के तहत प्रदान की गई प्रक्रियाओं या अदालत के आदेश के माध्यम से ही सेंसर किया जा सकता है।

2023 में भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा जारी निर्देश:

➤ इसने सभी मंत्रालयों, राज्य सरकारों और पुलिस को निर्देश जारी किया था कि धारा 79(3)(b) के तहत सूचनाओं को ब्लॉक करने संबंधी आदेश जारी किए जा सकते हैं।

⊕ 2024 में, MeitY ने एक 'सहयोग' पोर्टल लॉन्च किया था। इस पर उपर्युक्त प्राधिकारी सूचनाओं को ब्लॉक करने संबंधी आदेश जारी और अपलोड कर सकते हैं।

X द्वारा उठाए गए मुद्दे

➤ धारा 79(3)(b) का दुरुपयोग: यह सरकार को प्रत्यक्ष रूप से सूचनाओं को ब्लॉक करने की शक्तियां नहीं देती है, बल्कि केवल उन परिस्थितियों का उल्लेख करती है, जिनके तहत मध्यवर्ती अपने "सेफ हार्बर" संरक्षण से वंचित हो सकता है।

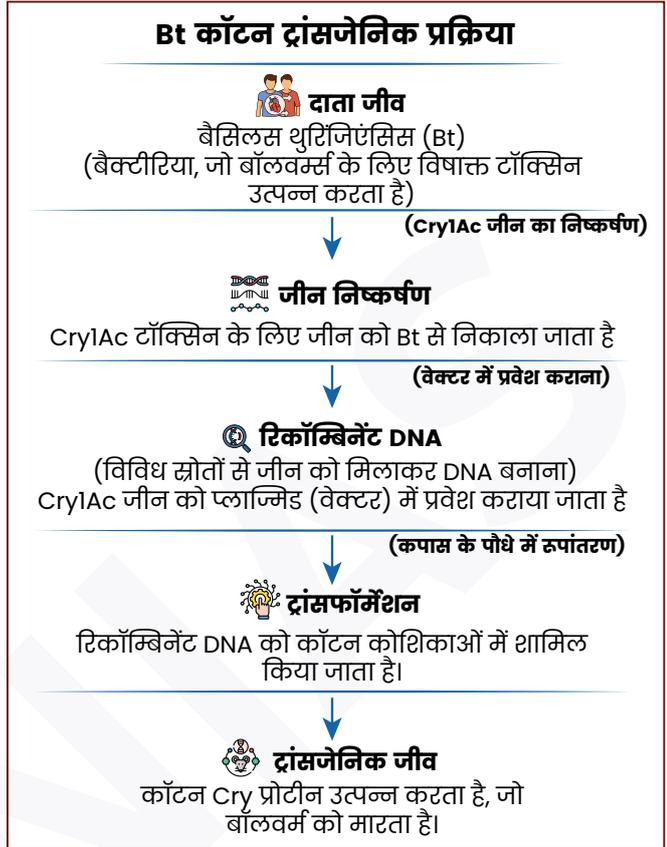
➤ श्रेया सिंघल निर्णय का उल्लंघन: MeitY के निर्देश धारा 69A का पालन करने की बजाय कंटेंट को ब्लॉक करने के लिए धारा 79(3)(b) को उपकरण मानकर सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्थापित प्रक्रियात्मक सुरक्षा उपायों को दरकिनार करते हैं।

ट्रांसजेनिक चूहों के लिए फंडिंग पर अमेरिकी राष्ट्रपति के गलत बयान के बाद ट्रांसजेनिक चूहे सुर्खियों में आए

ट्रांसजेनिक से तात्पर्य ऐसे जीव या कोशिका से है, जिसके जीनोम को किसी अन्य प्रजाति से लिए गए एक या अधिक DNA अनुक्रमों के उस जीनोम में प्रवेश द्वारा उसे बदल दिया गया है। जीनोम वस्तुतः कोशिका में पाए जाने वाले DNA निर्देशों का संपूर्ण सेट होता है।

ट्रांसजेनिक जीवों के बारे में

- ▶ अवधारणा: ट्रांसजेनिक जीव वे होते हैं, जो अपनी प्रजाति के प्राकृतिक गुणों की बजाय नए गुण या प्रोटीन निर्माण को प्रदर्शित करते हैं। 'ट्रांस' का अर्थ है 'एक से दूसरे तक' और 'जेनेटिक' का अर्थ है 'जीन'।
- ▶ ट्रांसजेनिक चूहा: ट्रांसजेनिक चूहे को जैविक प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए एक प्रमुख मॉडल के रूप में उपयोग किया जाता है। ऐसा इस कारण, क्योंकि इसकी फिजियोलॉजिकल, एनाटॉमिकल और जीनोमिक संरचनाएं मानव से मिलती-जुलती हैं।
- ▶ इसके उद्देश्य एवं उपयोग
 - ⊕ सामान्य शारीरिक प्रक्रियाओं (फिजियोलॉजिकल) को समझना: उदाहरण के लिए- चयापचय और रक्त कोशिका उत्पादन का अध्ययन करने के लिए ट्रांसजेनिक चूहों का उपयोग किया जाता है।
 - ⊕ मानव रोगों का मॉडल बनाना: उदाहरण के लिए- अल्जाइमर जैसे मानव रोगों का मॉडल बनाने के लिए ट्रांसजेनिक सूअरों का उपयोग किया जाता है।
 - ⊕ नये उपचारों का विकास करना: उदाहरण के लिए- ट्रांसजेनिक जेब्राफिश के कारण दवा के परीक्षण और उपचार के विकास में तेजी आई है।
 - ⊕ थेराप्यूटिक प्रोटीन का उत्पादन: ह्यूमन एंटीथ्रोम्बिन (रक्त का थक्का बनाने वाला प्रोटीन) का उत्पादन करने के लिए ट्रांसजेनिक बकरियों का विकास किया गया है।
 - ⊕ रोग प्रतिरोधी फसलें: उदाहरण के लिए- Bt कॉटन आनुवंशिक रूप से संशोधित फसल है, जो बॉलवर्म के खिलाफ प्रतिरोधी है।
- ▶ चुनौतियां
 - ⊕ नैतिक चिंताएं: इसमें पशु पर अत्याचार से संबंधित पक्ष तथा आनुवंशिक संशोधन के कारण अनपेक्षित परिणाम आना शामिल है।
 - ⊕ पर्यावरणीय जोखिम: ट्रांसजेनिक जीवों का पारिस्थितिकी-तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकता है।
- ▶ इससे संबंधित भारत में विनियमन: पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के अंतर्गत 'नियम, 1989'; जेनेटिक इंजीनियरिंग मूल्यांकन समिति (GEAC) आदि।



कृषि पर संसदीय स्थायी समिति ने मात्स्यिकी क्षेत्रक पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की

इस रिपोर्ट में मात्स्यिकी क्षेत्रक में सुधार, रोजगार के अवसर बढ़ाने और राजस्व सृजन को बढ़ावा देने के लिए पूर्व में की गई सिफारिशों पर सरकार की कार्यवाहियों का मूल्यांकन किया गया है।

- ▶ भारत विश्व में तीसरा सबसे बड़ा मत्स्य-उत्पादक देश है। विश्व में मत्स्य उत्पादन में भारत लगभग 8% का योगदान देता है।
- ▶ पिछले कुछ वर्षों में, कृषि सकल मूल्य वर्धन (GVA) में मात्स्यिकी क्षेत्रक का योगदान 4% से बढ़कर 6.72% से अधिक हो गया है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

देखांकित मुख्य मुद्दे	सिफारिशें
मात्स्यिकी पर अलग शोध संस्थान का अभाव: मात्स्यिकी क्षेत्रक पर अनुसंधान भी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) के अंतर्गत आता है। इससे इस क्षेत्रक पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है।	भारतीय मात्स्यिकी और जलीय-कृषि अनुसंधान परिषद् (Indian Council for Fishery and Aquaculture Research: ICFAR) की स्थापना की जानी चाहिए।
छोटी मछलियों (Juvenile Fish) के पकड़ने पर नियंत्रण: बल ट्रॉलिंग और LED फिशिंग जैसी हानिकारक तकनीकें जलाशयों में मछलियों की संख्या (फिश स्टॉक) को कम कर रही हैं।	मछली पकड़ने के जालीदार जालों का कानूनी न्यूनतम आकार नियम को लागू करना चाहिए साथ ही, फिश स्टॉक को कम करने वाली तकनीकों पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए।
मछुआरों के लिए ब्याज-मुक्त ऋण: केवल कुछ राज्यों में किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) पर 4% अतिरिक्त ब्याज सब्सिडी दी जाती है।	किसान क्रेडिट कार्ड से ब्याज-मुक्त ऋण को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करना चाहिए।
मछली पकड़ने के बाद नुकसान और अवसंरचना: मछलियों के भंडारण और प्रसंस्करण के लिए सुविधाओं की कमी है। इससे पकड़ी गई लगभग 20-25% मछलियां बाजार तक नहीं पहुंच पाती हैं।	प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के तहत कोल्ड स्टोरेज, प्रसंस्करण और परिवहन सुविधाओं में सुधार किए जाने चाहिए।
श्रिम्प (श्रींगा) बूडस्टॉक में आत्मनिर्भरता: भारत अभी भी एल. वन्नामेई (L. Vannamei) श्रींगा बूडस्टॉक के आयात पर निर्भर है।	ICAR के माध्यम से देश में ही बूडस्टॉक के विकास को तेज करना चाहिए।
बांध के गेट खुलने और भारी बारिश के कारण फिश स्टॉक बह जाते हैं।	प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) की तर्ज पर बांध के आसपास के मछुआरों के लिए बीमा योजना शुरू की जानी चाहिए।
सैनिटरी और फाइटोसैनिटरी (SPS) मानकों के अनुपालन; निर्यात प्रमाणन और ट्रेसेबिलिटी की कमी जैसी वजहों से मत्स्य निर्यात में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।	निर्यात प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए सैनिटरी और फाइटोसैनिटरी नियमों के अनुपालन को बढ़ावा देना चाहिए ; प्रमाणन एवं ट्रेसेबिलिटी में सुधार करना चाहिए आदि।

उर्वरक समिति ने पोषक तत्व सस्बिडी योजनाओं (NBSSs) के अपर्याप्त वित्त-पोषण पर चिंता जताई

समिति के अनुसार, उर्वरक विभाग ने 2025-26 में अपनी विविध योजनाओं के लिए लगभग 1.84 लाख करोड़ रुपये की मांग की थी, परन्तु इसके बावजूद वित्त मंत्रालय ने इस आवंटन में लगभग 7% की कटौती की।

यह कटौती पोषक तत्व आधारित सस्बिडी (NBS) योजना और यूरिया सस्बिडी योजना दोनों में की गई है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर:

- उर्वरक सुरक्षा को मजबूत करना: भू-राजनीतिक तनाव और कीमतों में उतार-चढ़ाव के कारण आवश्यक उर्वरकों की कमी हो रही है, जैसे DAP (डाय-अमोनियम फॉस्फेट)।
- तकनीकी प्रगति और खनन: फॉस्फेट और पोटैश जैसे जरूरी कच्चे माल के लिए खनन पट्टे सुरक्षित करने संबंधी पहल नहीं की गई है।
- NPKS (नाइट्रोजन-फास्फोरस-पोटेशियम-सल्फर) उर्वरकों के ग्रेड में संशोधन: सभी जगह मिट्टी की जरूरत के अनुसार सही ग्रेड के उर्वरक उपलब्ध नहीं हैं। इससे किसानों को अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ता है।
- प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT): DBT प्रणाली में वास्तविक लाभार्थियों की पहचान के लिए कोई तंत्र नहीं है, जिससे दुरुपयोग हो रहा है।
- नैनो उर्वरक: नैनो यूरिया व नैनो DAP फसल उत्पादन बढ़ाने में मदद कर सकते हैं, लेकिन इन पर अभी और शोध किए जाने की जरूरत है।

सिफारिशें

- आपूर्ति अनुपालन और संतुलित वितरण: आपूर्ति से जुड़े नियमों को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए। साथ ही, मृदा की आवश्यकताओं के आधार पर संतुलित उर्वरक वितरण को प्राथमिकता देने का प्रयास करना चाहिए।
- उर्वरक संकट प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली (FCEWS): उर्वरक की संभावित कमी का अनुमान लगाने और रणनीतिक भंडार बनाए रखने के लिए FCEWS की स्थापना की जानी चाहिए।
- पाल किसानों की पहचान के लिए आधार/ AADHAAR को किसान रजिस्ट्री से जोड़ा जाना चाहिए। इससे जोत के आकार के अनुसार उर्वरक खरीद की सीमा तय करने में मदद मिलेगी।
- मृदा स्वास्थ्य और फसल उत्पादन में सुधार के लिए यूरिया गोल्ड के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। साथ ही, पारंपरिक यूरिया पर निर्भरता कम करने के प्रयास करने चाहिए।

पोषक तत्व आधारित सस्बिडी (NBS) नीति

- सस्बिडी दरें: नाइट्रोजन (N), फॉस्फेट (P), पोटैश (K), और सल्फर (S) के लिए निश्चित सस्बिडी दरें तय की जाती हैं। इन दरों की हर साल या प्रत्येक छह महीने में समीक्षा की जाती है।
- कवरेज: इसमें 28 प्रकार के P&K उर्वरक शामिल हैं, जैसे DAP (डाय-अमोनियम फॉस्फेट), MAP (मोनो अमोनियम फॉस्फेट), और MOP (म्युरेट ऑफ पोटैश)।
- MRP में लचीलापन: उर्वरक बनाने वाली कंपनियां MRPs तय करती हैं। यद्यपि सरकार किसानों की वहुनीयता के आधार पर कीमतों की जांच कर सकती है।
- अतिरिक्त सस्बिडी: बोरॉन और जिंक जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों के लिए अलग से सस्बिडी दी जाती है।

यूरिया सस्बिडी योजना

- उद्देश्य: किसानों के लिए कृषि यूरिया सुनिश्चित करना। यह खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।
- उत्पादन फोकस: स्वदेशी उत्पादन को अधिकतम करने पर ध्यान देना और यूरिया उत्पादन में आत्मनिर्भरता का लक्ष्य हासिल करना।

अन्य सुर्खियां



एंथुरियम (Anthurium)

कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA) ने मिजोरम से सिंगापुर के लिए एंथुरियम फूलों के पहले निर्यात की सुविधा प्रदान की।

एंथुरियम के बारे में

- एंथुरियम सुंदर फूलों वाले पादपों का एक समूह है। इस समूह के फूल अलग-अलग रंगों में खिलते हैं। यह उष्णकटिबंधीय अमेरिकी मूल का पौधा है।
- यह भारत के मिजोरम राज्य में उगाए जाने वाले कुछ सबसे महत्वपूर्ण फूलों में से एक है।
- अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने इसे वायु शुद्ध करने वाले पादपों की सूची में शामिल किया है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यह पादप फॉर्मिलिहाइड, अमोनिया, टोल्यून, जाइलीन और एलर्जिस जैसे हानिकारक रासायनिक तत्वों को हटाकर वायु को शुद्ध करता है।
- मिजोरम में हर साल "एंथुरियम महोत्सव" का आयोजन किया जाता है। यह महोत्सव पर्यटन को बढ़ावा देता है और इस फूल की सुंदरता एवं सजावट में इसके महत्त्व को उजागर करता है।



AI-वॉशिंग

कई वेंचर कैपिटलिस्ट, स्टार्ट-अप द्वारा फंड प्राप्त करने हेतु इस्तेमाल किए जाने वाले AI-वॉशिंग तरीके से चिंतित हैं।

AI-वॉशिंग के बारे में

- AI वॉशिंग वह प्रक्रिया है, जिसमें कंपनियां अपने उत्पादों, सेवाओं या व्यापार रणनीतियों में AI के उपयोग को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करती हैं या गलत तरीके से प्रस्तुत करती हैं।
- "AI वॉशिंग" शब्दावली "ग्रीनवॉशिंग" से प्रेरित है।
- ग्रीनवॉशिंग के तहत कंपनियां अपनी सेवा या अपने उत्पाद के पर्यावरण-अनुकूल होने के दावों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करती हैं।
- AI-वॉशिंग के उदाहरण:
 - ऑटोमेशन को AI बताकर गलत तरीके पेश करना;
 - AI संबंधी सतही दावे करना;
 - "AI-संचालित" जैसे बजवर्ड्स का उपयोग करना।



शीथिया रोजमलायेंसिस (Sheathia rosemalayensis)

शोधकर्ताओं ने ताजे जल की नई शैवाल प्रजाति 'शीथिया मलायेंसिस' की खोज की।

शीथिया रोजमलायेंसिस के बारे में

- यह केरल के पश्चिमी घाट में स्थित रोजमला (Rosemala) में खोजी गई है। उसी स्थान के नाम पर इसका नामकरण किया गया है।
- शीथिया प्रजातियां भारत में अत्यंत दुर्लभ हैं। इससे पहले, केवल एक अन्य प्रजाति हिमालय में खोजी गई थी।

शैवाल (Algae) के बारे में

- शैवाल प्रकाश-संश्लेषण करने वाली पादप प्रजातियों का एक विविध समूह है। ये प्रजातियां जलीय और आर्द्र पारिस्थितिकी-तंत्र में पाई जाती हैं।
- इनका आकार सूक्ष्म आकार के फाइटोप्लैक्टन से लेकर कल्प जैसे विशाल समुद्री शैवाल जितना बड़ा हो सकता है।
- शैवाल पारिस्थितिकी-तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये ऑक्सीजन के स्रोत हैं और जलीय खाद्य श्रृंखला का आधार हैं।



ज्ञानपीठ पुरस्कार

विनोद कुमार शुक्ल को 59वें ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए चुना गया। यह पुरस्कार भारत का सबसे बड़ा साहित्यिक सम्मान माना जाता है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार के बारे में

- ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1965 से हर साल भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा दिया जाता है।
- भारतीय ज्ञानपीठ की स्थापना 1944 में हुई थी। यह भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्थाओं में से एक है।
- यह पुरस्कार भारत के संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं में से किसी भी भाषा में सर्वश्रेष्ठ रचनात्मक साहित्यिक कृति के लेखक को हर साल दिया जाता है।
- 2013 से अंग्रेजी भाषा में लिखित साहित्यिक कृतियों को भी इसमें शामिल किया गया है।
- यह पुरस्कार केवल भारतीय नागरिकों को ही दिया जाता है।



शहीद दिवस

संपूर्ण देश ने शहीद दिवस पर भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की।

शहीद दिवस के बारे में

- 23 मार्च को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- यह दिन 1931 में ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जॉन सॉन्डर्स की हत्या के आरोप में भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दिए जाने की स्मृति में मनाया जाता है।

भगत सिंह

- वे मार्क्स, लेनिन, ट्रॉट्स्की और बाकुनिन से प्रभावित थे।
- उन्होंने नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी।

सुखदेव थापर

- सुखदेव HSRA (हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन) के सदस्य थे।
- उन्होंने उत्तरी भारत के कुछ हिस्सों में क्रांतिकारी प्रकोष्ठों का आयोजन किया था।

राजगुरु

- शिवराम हरि राजगुरु HSRA के प्रमुख सदस्य थे।



NeVA प्लेटफॉर्म

दिल्ली विधान-सभा, नेशनल ई-विधान एप्लीकेशन (NeVA) प्लेटफॉर्म से जुड़ गई।

NeVA प्लेटफॉर्म के बारे में

- परिचय:** NeVA एक वर्क-फ्लो सिस्टम है। इसे मेघराज क्लाउड पर होस्ट किया गया है। यह सदन के अध्यक्ष/सभापति को कार्यवाही को सुचारू रूप से संचालित करने में मदद करता है।
- सांसद/विधायक कागजों का इस्तेमाल किए बिना अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकते हैं।
- कार्यान्वयन मंत्रालय:** यह प्लेटफॉर्म संसदीय कार्य मंत्रालय (MoPA) द्वारा विकसित किया गया है।
- मुख्य विशेषताएं:**
 - सभी प्रकार के डिवाइसेज़ पर उपयोगी: सांसद/विधायक इसे किसी भी डिवाइस (स्मार्टफोन, टैबलेट, लैपटॉप आदि) से कहीं भी एक्सेस कर सकते हैं।
 - सुरक्षित डिजिटल भंडार (Secure Digital Repository):** विधायी डेटा की गोपनीयता और शुचिता सुनिश्चित करता है।
 - इसे कई भाषाओं में इस्तेमाल किया जा सकता है।



एंटी-डंपिंग शुल्क

भारत ने चीन से आयात की जाने वाली कई वस्तुओं पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगाया है।

एंटी-डंपिंग शुल्क के बारे में

- परिभाषा:** विश्व व्यापार संगठन (WTO) के अनुसार, एंटी-डंपिंग शुल्क ऐसे टैरिफ हैं, जो किसी देश की सरकार विदेशी आयातों पर तब लगाती है, जब उन्हें उचित घरेलू बाजार मूल्य से कम कीमत पर बेचा जाता है।
 - वस्तुओं का मूल्य कम करके निर्यात की जाने वाली प्रक्रिया को "डंपिंग" कहा जाता है।
- एंटी-डंपिंग शुल्क के उद्देश्य:**
 - अनुचित प्रतिस्पर्धा को रोकना;
 - घरेलू उद्योगों की रक्षा करना;
 - प्रिडेटरी प्राइसिंग को हतोत्साहित करके निष्पक्ष व्यापार को सुनिश्चित करना आदि।
 - प्रिडेटरी प्राइसिंग वास्तव में किसी वस्तु की लागत से कम मूल्य रखना है।
- WTO के एंटी-डंपिंग नियम**
 - जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफ एंड ट्रेड (GATT) 1994 के अनुच्छेद VI के तहत एंटी-डंपिंग शुल्क लगाने की अनुमति है।
 - एंटी-डंपिंग शुल्क लगाने से पहले डंपिंग, घरेलू उद्योग को नुकसान और दोनों के बीच संबंध को साबित करना आवश्यक है।
 - एंटी-डंपिंग उपाय अस्थायी होने चाहिए और समय-समय पर उनकी समीक्षा की जानी चाहिए।



ऑर्गेनोमेटेलिक अणु

वैज्ञानिकों ने बर्केलोसीन नामक पहला ऑर्गेनोमेटेलिक अणु खोजा है। इसमें भारी तत्व बर्केलियम मौजूद है।

ऑर्गेनोमेटेलिक अणु के बारे में

- वे अणु जिनमें कार्बन और धातु के बीच बंध होता है, उन्हें ऑर्गेनोमेटेलिक यौगिक कहते हैं।
- ये अनूठे होते हैं, क्योंकि इनमें धातु और कार्बन दोनों के गुण पाए जाते हैं।
- गुण:**
 - ये संवेदनशील होते हैं और हवा या नमी के संपर्क में आने पर खराब हो सकते हैं।
 - ये यौगिक गर्मी के तहत स्थिर हो सकते हैं। हालांकि, इनकी सटीक तापमान सहनशीलता व्यापक रूप से अलग-अलग हो सकती है।
 - इनमें से कुछ विद्युत का संचालन कर सकते हैं। इसलिए ये इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।
 - ये अक्सर उत्प्रेरक के रूप में काम करते हैं, तथा रासायनिक अभिक्रिया में खपत (खत्म) हुए बिना उसे गति प्रदान कर सकते हैं।

सुर्खियों में रहे व्यक्तित्व



डॉ. राम मनोहर लोहिया (1910 – 1967)

हाल ही में डॉ. राम मनोहर लोहिया की जयंती मनाई गई।

डॉ. राम मनोहर लोहिया के बारे में

- डॉ. लोहिया का जन्म अकबरपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था।
- वे एक दूरदर्शी नेता, स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक न्याय के समर्थक थे।

मुख्य योगदान

- स्वतंत्रता संग्राम: उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में भाग लिया था तथा जीवन में कई बार जेल गए थे।
 - उन्होंने गोवा में पुर्तगाली शासन के खिलाफ आंदोलन किया था।
- सामाजिक:** लोहिया ने आर्थिक लोकतंत्र के माध्यम से जाति व वर्ग के बीच और लैंगिक असमानताओं को खत्म करने की बात की
- राजनीतिक:** लोहिया ने नव-समाजवाद के लिए छह सूत्री योजना पेश की थी, जिसमें शामिल थे:
 - अधिकतम प्राथ्य समानता,
 - वैश्विक जीवन स्तर,
 - विश्व सरकार आदि।
- साहित्यिक कृतियां:** कास्ट सिस्टम; व्हील ऑफ हिस्ट्री; मार्क्स, गांधी और समाजवाद आदि।

मूल्य:

- न्याय, समानता, निःस्वार्थता, अहिंसा आदि।

